Baba’s Praise

5/2/2015

- रूहानी बच्चे इस समय कहाँ बैठे हैं? कहेंगे रूहानी बाप की यूनिवर्सिटी अथवा पाठशाला में बैठे हैं । बुद्धि में है कि हम रूहानी बाप के आगे बैठे हैं, वह बाप हमको सृष्टि के आदि-मध्य- अन्त का राज समझाते हैं अथवा भारत का राइज और फाल कैसे होता है, यह भी बताते हैं ।

- अभी तुम बच्चे जानते हो हम भी बाप द्वारा ऐसे दैवीगुण धारण कर रहे हैं ।

- बाप तो सदैव सतोप्रधान है ।

- पहले तो ईश्वर को जानते ही नहीं थे । बाप ने आकर के यह फैमिली बनाई है ।

- सागर को भी देवता रूप समझते हैं । तुम समझते हो बाप तो ज्ञान का सागर है ।

- सदा उल्लास रहे कि ज्ञान सागर बाप हमें रोज ज्ञान रत्नों, जवाहरातों की थालियां भरकर देते हैं । बाप तुम बच्चों को ज्ञान रत्न देते हैं, जो तुम बुद्धि में भरते हो ।

- कहते हैं - हे पतित-पावन, हम पतितों को आकर पावन बनाओ ।

- यह तुम बच्चे जानते हो, अभी ही हम भगवान के बच्चे बने हैं, बाप से वर्सा लेने, परन्तु माया भी कम नहीं है ।

- मुहब्बत रखनी है उनसे जो देह रहित विचित्र बाप है ।

- जैसे बाप ज्ञान का सागर है वैसे तुमको भी बनाते हैं । तुम पढ़कर यह पद पाते हो । बाप स्वर्ग का रचयिता है तो स्वर्ग का वर्सा भारतवासियों को ही देते हैं ।

- बाप ही बैठ अपना और रचना के आदि-मध्य-अन्त का परिचय देते हैं, और कोई दे न सके । अब बाप द्वारा तुम त्रिकालदर्शी बनते हो ।

- मेरी तो है ही पारसबुद्धि, तब तो तुमको पारसबुद्धि बनाने आता हूँ । कल्प-कल्प आता हूँ ।

- ऐसा बाप जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है, उनको भी छोड़ देते हैं ।